कार्यालय प्राचार्य, शासकीय डॉ.वा.वा.पाटणकरकन्यास्नातकोत्तरमहाविद्यालय,
केन्द्रीय विद्यालय के पास, जेलरोडदुर्ग (छ.ग.)
पूर्वनाम–शासकीय कन्यामहाविद्यालय,दुर्ग (छ.ग.) फोन 0788–2323773
Email- govtgirlspgcollege@gmail.com Website: www.govtgirlspgcollegedurg.ac.in
College Code : 1602

दुर्ग, दिनांक : 12.12.2024

//प्रेस विज्ञप्ति//

उष्णकटिबंधीय चक्रवात कि उत्पत्ति और इसके मानवीय जीवन पर प्रभाव–डॉ. के. एन. प्रसाद

शासकीय डॉ. वा. वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.) भूगोल विभाग के तत्वाधान में उष्णकटिबंधीय चक्रवात कि उत्पत्ति और इसके मानवीय जीवन पर प्रभाव पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

भूगोल विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. सुषमा यादव ने जानकारी देते हुए बताया की महाविद्यालय के भूगोल परिषद् के द्वारा आयोजित व्याख्यान माला में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की उत्पत्ति और इनके मानवीय जीवन पर प्रभाव पर शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. के. एन. प्रसाद का व्याख्यान आयोजित किया गया डॉ. के. एन. प्रसाद ने उष्णकटिबंधीय चक्रवात की उत्पत्ति एवं इसके मानवीय जीवन पर प्रभाव पर नई जानकारियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उष्णकटिबंधीय चक्रवात की उत्पत्ति समुद्री क्षेत्रों में समुद्री सतह के तापमान में अंतर के कारण होती है। उष्णकटिबंधीय चक्रवात की उत्पत्ति विशेष दशाओं में होता है, तथा इन चक्रवातों का प्रभाव हमें समुद्री तटीय क्षेत्रों में और स्थल क्षेत्रों में रहने वाली मानवीय जीवन पर सीधा प्रभाव देखने को मिलता है।

विभागाध्यक्ष डॉ. सुषमा यादव ने अपने सबोधन में कहा कि उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की उत्पत्ति समुद्री क्षेत्रों में होती है और तटीय क्षेत्रों के साथ–साथ स्थलीय क्षेत्रों में मानवीय क्रियाकलापों को भी प्रभावित करती है।

कार्यक्रम का संचालन श्री नितिन कुमार, सहायक प्राध्यापक जनभागीदारी ने किया इस कार्यक्रम में श्रीमती सुनीता बेर एवं श्रीमती किरण साहू के साथ ही महाविद्यालय के भूगोल विभाग की छात्राओं की उपस्थिति रही।

समाचार के रूप में प्रकाशन हेतु निवेदित।

(डॉ0 डी. सी. अग्रवाल)
प्रभारी प्राचार्य
शास0 डॉ0 वा0 वा0 पाटणकर कन्या
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ0ग0)

दुर्ग, दिनांक : 12.12.2024

//प्रेस विज्ञप्ति//

उष्णकटिबंधीय चक्रवात कि उत्पत्ति और इसके मानवीय जीवन पर प्रभाव–डॉ. के. एन. प्रसाद